National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 125-129
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

चेतन पुरी
शोधार्थी,
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग-
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

शोध निर्देशिका
डॉ. अंजना शर्मा
सह आचार्य,
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग-
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

Correspondence:
चेतन पुरी
शोधार्थी,
संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग-
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

"राजस्थान के आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों का वैदिक विमर्श"
(17वीं से 20वीं शताब्दी तक)

चेतन पुरी, डॉ. अंजना शर्मा

शोध सारांश - राजस्थान केवल शौर्य और भक्ति की भूमि ही नही बल्कि यह संस्कृत वाङ्मय, विशेषकर वैदिक साहित्य के अध्ययन, मनन और सृजन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र भी रहा है। महत्त्व 17वीं से 20वीं शताब्दी के कालखंड में, राजस्थान के मनीषियों ने न केवल वेदों के पारंपरिक अध्ययन जैसे भाष्य, टीका और मीमांसा को संरक्षित रखा, बल्कि वेद-विज्ञान जैसी नवीन व्याख्या पद्धतियों को भी जन्म दिया। यह अध्ययन पं. मधुसूदन ओझा, पं. मोतीलाल शास्त्री, डॉ. दयानन्द भार्गव, डॉ. मण्डन मिश्र, और याज्ञिक सम्राट् शिवदत्त जोशी जैसे उद्धृट विद्वानों के जीवन-वृत्त और उनके विशिष्ट वैदिक अवदान का विश्लेषण करता है। इसमें उनके रचित ग्रंथों, उनके दार्शनिक सिद्धांतों (अद्वैत वेदान्त, मीमांसा, सांख्य), और वैदिक ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के उनके प्रयासों को रेखांकित किया गया है। इस युग के राजस्थानी विद्वानों ने न केवल वेदों की पारंपरिक व्याख्याओं को संरक्षित किया, बल्कि उन्होंने वैदिक ज्ञान को समकालीन चुनौतियों और वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ जोड़ने का भी अभूतपूर्व प्रयास किया। पं. मधुसूदन ओझा और पं. मोतीलाल शास्त्री द्वारा प्रवर्तित वेद-विज्ञान की अवधारणा, पं. नवलकिशोर काङ्कर द्वारा राष्ट्रवेद का सृजन, और महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जैसे विद्वानों का समग्र शास्त्रीय योगदान इस क्षेत्र में हुए मौलिक चिंतन को प्रमाणित करता है। यह काल भारतीय इतिहास में सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक संक्रमण का समय था, जिसके मध्य राजस्थान ने वैदिक अध्ययन के केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाए रखी। यह शोध स्थापित करता है कि राजस्थान इस दौरान वैदिक वाङ्मय के संरक्षण, संवर्धन और पुनर्व्याख्या का एक जीवंत केंद्र था, जिसने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने में निर्णायक भूमिका निभाई। राजस्थान के इन साहित्यकारों का योगदान केवल क्षेत्रीय न होकर, भारतीय संस्कृति और वैदिक ज्ञान की शाश्वत धारा को अक्षुण्ण बनाए रखने में राष्ट्रीय महत्त्व का रहा है।

कुंजी शब्द- वैदिक साहित्य, राजस्थान, वेद-विज्ञान, संस्कृत, मीमांसा दर्शन, वेदान्त, मधुसूदन ओझा, मोतीलाल शास्त्री, वैदिक परम्परा, उपनिषद्, निगम-आगम, राष्ट्रवेद, संस्कृत पुनर्जागरण।

प्रस्तावना - ज्ञान की अक्षुण्ण धारा अज्ञात पद से अवतीर्ण होकर वसुन्धरा की आंचल को सरस बनाकर, उस पर आश्रित मानवों के मन को पावन ही नहीं बनाती अपितु, अद्भुत शक्ति का संचार भी करती है। भारतीय ज्ञान-परंपरा का मूल स्रोत वेद हैं। भारत-भारती एवं भारतीयता की अजस्रधारा युग-युगान्तर से प्रवाहित हो रही है। विश्ववन्दनीय भारतीय संस्कृति का अंकुरण इसी वैदिक पृष्ठभूमि पर हुआ है, जिसे मुख्य केन्द्रबिन्दु मानकर सर्व-धर्म-समभाव प्रादुर्भूत हुआ है। मनु ने वेदों को सारे ज्ञानों का आधार मानकर उन्हें सर्वज्ञानमय कहा है, अर्थात् वेदों में सभी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ।[1]

सहस्राब्दियों से वेदों ने भारतीय संस्कृति, दर्शन, विज्ञान और जीवन-पद्धति को अनुप्राणित किया है। सायणाचार्य के अनुसार - **इष्टप्राप्त्यनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः**[2] अर्थात् अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति तथा अनिष्ट के निवारण के लिए अलौकिक उपाय बताने वाले ग्रन्थ को वेद कहते हैं।

वेद शब्द की उत्पत्ति के लिए चार धात्वर्थ प्रमुख है। (1) विद् सत्तायाम् (होना, दिवादि), (2)विद् ज्ञाने (जानना अदादि), (3) विद् विचारणे (विचारना,रुधादि), (4) विद्लृलाभे (प्राप्त करना, तुदादि)। इसके लिए कारिकांश है

"सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।"[3]

समय के साथ वेदों की व्याख्या, मीमांसा और उन पर आधारित दर्शनों का विकास होता रहा। मध्यकाल के राजनीतिक उथल-पुथल के बाद, 17वीं से 20वीं शताब्दी का कालखंड भारतीय विद्याओं के पुनर्जागरण का साक्षी बना। इस पुनर्जागरण में राजस्थान की भूमि का योगदान अप्रतिम रहा है। शौर्य और कला के लिए विख्यात यह प्रदेश संस्कृत विद्या और विशेष रूप से वैदिक अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा। इस अवधि में यहाँ अनेक ऐसे मनीषी हुए जिन्होंने न केवल वेदों के पारंपरिक ज्ञान को अक्षुण्ण रखा, अपितु उसे नवीन दृष्टिकोणों से विश्लेषित कर समकालीन जगत के लिए प्रासंगिक बनाया।

शोध पत्र के उद्देश्य - वैदिक परंपरा के संरक्षण और संवर्धन में भारत के विभिन्न क्षेत्रों का योगदान रहा है। सामान्यतः जब राजस्थान का उल्लेख होता है, तो मानस पटल पर वीरों की गाथाएँ, भक्ति की पराकाष्ठा और स्थापत्य की भव्यता उभरती है। किन्तु इस शौर्य और भक्ति की उर्वर भूमि ने संस्कृत वाङ्मय और विशेष रूप से वैदिक चिंतन की एक अत्यंत गहन और महत्त्वपूर्ण धारा को भी पोषित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र "राजस्थान के आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों का वैदिक विमर्श" (17वीं से 20वीं शताब्दी तक) शीर्षक के अंतर्गत इसी अल्प-चर्चित किन्तु गौरवशाली अध्याय को विश्लेषित करने का एक प्रयास है।

इस शोध में उन वैदिक साहित्यकारों के अवदान को प्रकाश में लाना है जिन्होंने अपनी प्रज्ञा और तपस्या से राजस्थान को वैदिक अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र बनाया। इन विद्वानों का कार्यक्षेत्र केवल परंपरागत टीका या भाष्य तक सीमित नहीं था। उन्होंने वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रंथों और उपनिषदों में निहित गूढ़ वैज्ञानिक रहस्यों को उजागर करने का प्रयास किया , जिसे 'वेद-विज्ञान' की संज्ञा दी गई। पं. मधुसूदन ओझा और उनके शिष्य पं. मोतीलाल शास्त्री इस धारा के प्रमुख प्रणेता माने जाते हैं, जिन्होंने वैदिक वाङ्मय को एक नवीन दृष्टि से देखने का मार्ग प्रशस्त किया। इसके अतिरिक्त, इस शोध में वैदिक दर्शन की विभिन्न शाखाओं यथा मीमांसा, वेदान्त और सांख्यकृमें राजस्थानी विद्वानों के योगदान को भी रेखांकित किया गया है। डॉ. मण्डन मिश्र ने जहाँ मीमांसा दर्शन पर समालोचनात्मक इतिहास लिखा, वहीं पं. श्री निवासाचार्य जैसे मनीषी अद्वैत वेदान्त के प्रबल समर्थक रहे। यह शोध उन गुरु-शिष्य परंपराओं पर भी प्रकाश डालता है जिन्होंने इस ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया, साथ ही उन शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका को भी स्वीकार करता है, जिन्होंने इन विद्वानों के निर्माण में आधारभूमि का कार्य किया। संक्षेप में, यह शोध पत्र साक्ष्यों के आधार पर यह स्थापित करने का प्रयास करेगा कि 17वीं से 20वीं शताब्दी का राजस्थान केवल तलवार और तराजू का ही नहीं, अपितु कलम और वेद का भी गढ़ था, जहाँ के मनीषियों ने अपने मौलिक चिंतन और सृजन से वैदिक साहित्य की सेवा की और एक ऐसी विरासत छोड़ी जो आज भी शोधार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

राजस्थान के प्रमुख वैदिक साहित्यकार एवं उनका योगदान विभिन्न श्रेणियों में -

1.वेद-विज्ञान के व्याख्याकार- राजस्थान की वैदिक परंपरा की सबसे अनूठी देन 'वेद-विज्ञान' की अवधारणा है, जिसने वेदों को केवल धार्मिक ग्रंथ न मानकर, उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान का कोष माना। वेदविद्या विशारद पं. श्री मधुसूदन ओझा (1866-1939) - यद्यपि आपका जन्म मिथिला में हुआ था, किन्तु आपकी कर्मभूमि जयपुर रही, जहाँ आपने वैदिक विज्ञान के सिद्धांतों को प्रकाश में लाने का संकल्प लिया। आपको 'वेदविद्या विचक्षण' और 'वेद मार्तण्ड' के रूप में जाना जाता है। आपका कृतित्व विशाल और गहन है, जिसे मुख्य रूप से 'निगम महाखण्ड' और 'आगम महाखण्ड' में विभाजित किया गया है। **निगम महाखण्ड में ब्रह्म विज्ञान**, **यज्ञ विज्ञान**, **पुराण-समीक्षा और वेदाङ्ग समीक्षा**[4] जैसे विषय शामिल हैं, जिनमें कुल 108 ग्रंथ समाहित हैं। आपकी रचनाएँ, जैसे 'इन्द्र विजयः', 'जगद्गुरुवैभवम्', 'ब्रह्म-सिद्धान्त', 'गीता विज्ञान भाष्य', और 'शारीरक विज्ञानम्', वेदों में छिपे गूढ़ वैज्ञानिक रहस्यों को उजागर करती हैं। आपने वर्णमाला, छंद, और खगोल विज्ञान की भी वैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत की। आपका संपूर्ण कार्य वैदिक विज्ञान और दर्शन के गहन विश्लेषण पर केंद्रित है, जो आपको इस क्षेत्र में एक अद्वितीय स्थान प्रदान करता है। पं. श्री मोतीलाल शास्त्री 'वेदवीथी पथिक' (1908-1960) - आप पं. मधुसूदन ओझा के प्रमुख शिष्य थे और उनके द्वारा विकसित किए गए वैदिक विज्ञान के बीज को वटवृक्ष का रूप देने का श्रेय आपको ही जाता है।आपने 20 वर्षों तक ओझा जी से वैदिक वाङ्मय की गहन शिक्षा प्राप्त की। आपने गीत, उपनिषद् और शतपथ ब्राह्मण जैसे आर्ष साहित्य पर लगभग 61 हजार पृष्ठों का सृजन कर अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया। आपकी प्रमुख रचनाओं में 'गीता विज्ञान भाष्य भूमिका' (आठ खण्डों में), **'उपनिषद विज्ञान भाष्य भूमिका'**[5] (तीन खण्डों में), और 'शतपथ ब्राह्मण' पर 1800 पृष्ठीय हिन्दी विज्ञान भाष्य शामिल हैं। आपके ग्रंथों के महत्त्व को इसी से समझा जा सकता है कि तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 'भारतीय संस्कृति की कुञ्जी' की संज्ञा दी थी। डॉ. दयानन्द भार्गव (जन्म 1937) - आपको 'वेद-विज्ञान के संदेशवाहक' और 'मनीषी विद्वान्' के रूप में जाना जाता है। आपने पं. मधुसूदन ओझा और पं. मोतीलाल शास्त्री के शास्त्रों का अनुशीलन कर ब्राह्मण ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक रहस्यों को राजस्थान पत्रिका में एक स्थायी स्तंभ के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। आपकी रचना 'ऋचा रहस्य' आपके वैदिक अन्वेषण का प्रथम सोपान थी। आपने 'नासदीय सूक्त' पर लेख लिखा और 'वेद-विज्ञान का प्रतिपादन' किया। **'वेद-विज्ञान-प्रवेशिका' और 'वेद-**

विज्ञान-वीथिका'[6] जैसे ग्रंथों का संपादन कर आपने वैदिक विज्ञान को सुलभ बनाया।

2. वैदिक दर्शनों के मनीषी (मीमांसा, वेदान्त, सांख्य) - वैदिक ज्ञान की दार्शनिक शाखाओं में भी राजस्थानी विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. मण्डन मिश्र (जन्म 1929)- आप संस्कृत वाङ्मय के श्रेष्ठ सृजनशिल्पी और पद्मश्री से सम्मानित विद्वान् हैं। आपने जयपुर के महाराजा संस्कृत कॉलेज से मीमांसा जैसे कठिन विषय में आचार्य परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया**,** जो वेदों की व्याख्या से संबंधित मीमांसा दर्शन में आपकी असाधारण दक्षता को दर्शाता है। **आपका डॉक्टरेट शोध ग्रंथ 'मीमांसा दर्शन का समालोचनात्मक इतिहास'**[7] सीधे तौर पर वैदिक व्याख्या और दर्शन से संबंधित है। आपको 'ज्योतिर्विज्ञानादि वैदिक विद्याओं के पुरोधा' के रूप में भी जाना जाता था। पं. श्री निवासाचार्य (जन्म 1914) - चूरू मण्डल से संबंधित आप एक प्रख्यात मनीषी थे जो 'अद्वैत वेदान्त के समर्थक' और शिवभक्त थे। आपकी अद्वैत वेदान्त में आस्था आपको सीधे वैदिक दर्शन से जोड़ती है**,** क्योंकि वेदान्त उपनिषदों पर आधारित वैदिक दर्शन की एक प्रमुख शाखा है। श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी महाराज' (जन्म 1929) - आप श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ के पीठाधीश्वर थे और जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य परम्परा के महान आचार्य थे**,** जो सनातन वैदिक धर्म और द्वैताद्वैत दर्शन पर आधारित है। आपकी कृति **'नवनीत सुधा**[8] (वेदान्त कामसुरभि की विवेचना)' वेदान्त दर्शन पर आधारित है**,** जो उपनिषदों से व्युत्पन्न है और उपनिषद वेदों का ही अभिन्न अंग हैं। पं. गोपीनाथ शास्त्री दाधीच - आप जयपुर स्थित महाराजा संस्कृत कॉलेज में अध्यापक थे और संस्कृत काव्य के शिखर मनीषी आचार्य थे। हितैषी पत्रिका में आपके 'वेदान्ती मर्मज्ञ रहस्य' को उद्घाटित किया गया**,** जो वेदांत में आपकी गहरी समझ को दर्शाता है। डा. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र - मध्यप्रदेश में जन्मे लेकिन राजस्थान संस्कृत विवि में सेवारत रहते हुये**,** डा. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने **'आपस्तम्बीयोद्वाहसमीक्षणम्**, **ऋङ्मन्यार्थ समालोचनम्**, **वैदिक कथावल्लरी**, **वैदिक यज्ञ पात्रों का विवेचन चन्द्रगुप्तविजयम्'**[9] नामक कृतियों की रचना की जो वेदों से संबंधित है।

3.भाष्यकार, अनुवादक एवं टीकाकार - वेदों और उपनिषदों के ज्ञान को सरल भाषा में प्रस्तुत करने में भी यहाँ के विद्वानों की अहम भूमिका रही। डॉ. सुधीर कुमार गुप्त (जन्म 1917)- आप एक उत्कृष्ट 'वेदविद्याविशारद' और 'वेद प्रचारक' थे। आपकी सबसे महत्त्वपूर्ण अकादमिक उपलब्धि राजस्थान विश्वविद्यालय से 'वेदभाष्य पद्धति को दयानन्द सरस्वती की देन' विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करना था। यह पुरस्कृत शोध प्रबंध दयानंद सरस्वती की वेदभाष्य पद्धति पर केंद्रित है। आपकी अन्य **वैदिक रचनाओं में 'ऋग्वेद के ऋषि और उनका सन्देश और दर्शन', 'ईशोपनिषद्', 'केनोपनिषद्', और 'वैदिक व्याकरण स्वर और पद पाठ'**[10] शामिल हैं। विद्याभूषण पद्म शास्त्री (जन्म 1935)- आपने वेद-विज्ञान पर आधारित 1050 श्लोकों का एक वेदकाव्य **'वेदविज्ञानामृतम्'**[11] की रचना की, जिसमें यज्ञ, सूर्य, प्राण, अन्न आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त, आपने पं. मोतीलाल शास्त्री के ग्रंथ 'वेदस्य सर्वविद्यानिधानत्वम्' और पं. मधुसूदन ओझा के 'वैदिकोपाख्यानम्' का हिन्दी में अनुवाद कर इन जटिल ग्रंथों को सुगम बनाया। पं. श्री महावीर प्रसाद जोशी (जन्म 1914) - आपने यजुर्वेद के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से 'रुद्राष्टाध्यायी' का पद्यानुवाद किया। यह कार्य वेदों के ज्ञान को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करने का एक स्तुत्य प्रयास है। ज्योतिः कविकलानिधि म. म. पं. दुर्गाप्रसाद द्विवेदी (जन्म 1863) - आपने नवल किशोर प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ के लिए 'ऋग्वेद का हिंदी अनुवाद' करने का कार्य प्रारंभ किया। यद्यपि यह कार्य पूर्ण न हो सका, तथापि यह प्रयास वेदों के प्रति आपकी गहन रुचि और विद्वत्ता को दर्शाता है।

4. वैदिक संस्कृति के शिक्षक, प्रचारक एवं उन्नायक - ज्ञान के सृजन के साथ-साथ उसका संरक्षण और प्रचार-प्रसार भी आवश्यक है। राजस्थान के कई विद्वानों ने अपना जीवन इसी ध्येय के लिए समर्पित कर दिया। याज्ञिक सम्राट् शिवदत्त जोशी- आपको वैदिक संस्कृति के अभ्युत्थान के लिए समर्पित, 'वेद-विज्ञान मनीषी' और 'वेद-पुरुष' के रूप में वर्णित किया गया है। आपके पिताश्री वेदपाठी थे और आपने संस्कृत ज्ञान के माध्यम से वेदों के अभिवर्द्धन को अपने जीवन का अंग बनाया। वैदिक प्रतिष्ठा और वैदिक वाङ्मय का प्रचार-प्रसार ही आपके जीवन का मुख्य ध्येय बन गया था। प्रोफेसर डॉ. सुभाष तनेजा विद्यालंकार (जन्म 1942)- आप एक प्रख्यात 'वेद मनीषी' और 'वेदानुरागी' व्यक्तित्व हैं। आपने गुरुकुल में रहते हुए 'वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र' का गहन अध्ययन किया। आपकी रचनाओं की सूची बहुत लंबी है, जिनमें 'ईश-काव्यम्' (ईशोपनिषद् पर आधारित), 'कठोपनिषद्', 'वैदिक-संस्कृति-पीयूषम्', 'वैदिक-चिन्तनधारा', और **'वेदों की वैज्ञानिक विवेचना'**[12] प्रमुख हैं। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय में रहते हुए अनेक संस्कृत संभाषण शिविरों का आयोजन किया और शोध छात्रों का मार्गदर्शन किया। डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा (1923) - आपको वेद, दर्शन, व्याकरण व साहित्य का विशेषज्ञ माना जाता था। यद्यपि आपकी रचनाओं में सीधे तौर पर वैदिक संहिताओं की टीकाएँ शामिल नहीं हैं, लेकिन 'तत्त्वशतकम्' जैसी दार्शनिक कृति और वेद-दर्शन के विशेषज्ञ के रूप में आपकी ख्याति आपके गहन वैदिक अध्ययन को प्रमाणित करती है। देवर्षि कलानाथ शास्त्री (जन्म 1936)- आप एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के मूर्धन्य विद्वान् हैं, जिन्होंने 'वेद, दर्शन, पुराणादि ग्रंथों' का विशेष अध्ययन किया है। **आपकी एक प्रमुख रचना 'वैदिक वाङ्मय में**

भारतीय संस्कृति"[13] है, जो वेदों से सीधा संबंध रखती है और भारतीय संस्कृति के वैदिक पहलुओं का विवेचन करती है।

5. वैदिक परंपरा के समग्र पोषक एवं नवीन प्रयोक्ता - इस श्रेणी के विद्वानों ने किसी एक विधा तक सीमित न रहकर, अपने संपूर्ण जीवन और कृतित्व से वैदिक संस्कृति का पोषण किया और कुछ ने तो मौलिक प्रयोग भी किए। महामहोपाध्याय पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी (1881-1966)- आप अखिल भारतीय स्तर के विख्यात विद्वान् थे, जिन्हें 1958 में सर्वप्रथम राष्ट्रपति-सम्मान प्रदान किया गया। आपका कृतित्व वेद, पुराण, व्याकरण, धर्मशास्त्र और दर्शन में समान रूप से फैला हुआ है। आपके "वेद खण्ड" की तीन महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं **"ऋतं च सत्यं च", "वेदेषु विज्ञानम् तस्य क्रमिको ह्रासश्च", और "वेदेषु पितरः"**[14]। ये कृतियाँ वैदिक ज्ञान के विभिन्न आयामों पर आपके मौलिक चिंतन को प्रस्तुत करती हैं। संस्कृत रत्नाकर पत्रिका के माध्यम से भी आपने संस्कृत और वैदिक ज्ञान का व्यापक प्रसार किया। पं. नवलकिशोर काङ्कर (1910-1996)- महामहोपाध्याय और राष्ट्रपति-सम्मान से विभूषित पं. काङ्कर का सबसे अनूठा और साहसिक प्रयोग **"राष्ट्रवेद"**[15] की रचना है। प्राचीन वैदिक शैली के आधार पर रचे गए इस नवीन वेद में आधुनिक भारत की स्थितियों, देश की उन्नति की कामना और नेताओं के चरित का वर्णन है । उन्होंने वैदिक गायत्री छंद की तरह "राष्ट्र-गायत्री छंद" का प्रयोग किया। 11 सूक्तों में विभक्त यह कृति (यथा- श्रेयःसूक्त, राष्ट्रसूक्त, कृषकसूक्त) वैदिक परंपरा को समकालीन राष्ट्र-बोध के साथ जोड़ने का एक अभूतपूर्व प्रयास है। इसके अतिरिक्त, उनका ग्रंथ "शास्त्रसर्वस्वम्" भी तीन स्कन्धों में विभक्त है, जिसका प्रथम स्कन्ध "वेद स्कन्ध" है, जिसमें उन्होंने वैदिक ऋषियों और वैदिक विज्ञान का प्रतिपादन किया है।

6. अप्रत्यक्ष किन्तु महत्त्वपूर्ण वैदिक योगदानकर्ता - कुछ विद्वानों का मुख्य क्षेत्र यद्यपि भिन्न था, तथापि उन्होंने अपनी कृतियों में वैदिक तत्वों का समावेश कर इस परंपरा को समृद्ध किया। पं. श्री नन्दकिशोर नामावल (जन्म 1904) - आप संस्कृत वाङ्मय के महान् मनीषी और शोधकर्ता थे। आपने अपनी रचनाओं में 'वैदिक कथाओं' को समायोजित किया है। विशेष रूप से, आपने अपने चंपू काव्यों में 'वैदिक कथाओं' तथा पंचतंत्र से ओतप्रोत हितोपदेशादि काव्य संदर्भों को स्थान दिया है, जो दर्शाता है कि उनकी साहित्यिक कृतियों में वैदिक परंपरा और ज्ञान का समावेश था। पं. गोपीकृष्ण व्यास (जन्म 1915)- आप राजस्थान के प्रख्यात संस्कृत रचनाकार थे। आप एक पूर्णतः 'वेदपाठी' और संगीतप्रेमी थे। वेदों के प्रति आपका योगदान व्याख्यान के माध्यम से प्रकट हुआ। ऑस्ट्रिया में आयोजित एक अधिवेशन में आपने "सिम्बालिज्म इन वेदाज" (Symbolism in Vedas) शीर्षक पर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया, जो वेदों के प्रतीकात्मक महत्त्व पर केंद्रित था। नारायणभट्ट पर्वणीकर (जन्म 1855) - आपकी असाधारण प्रतिभा का उदाहरण यह है कि आपने मात्र 8 वर्ष की अल्पायु में ही 'पुरुषसूक्त' और 'श्रीसूक्त' जैसे वैदिक सूक्तों का सश्रम अध्ययन कर लिया था। यह घटना आपकी वैदिक ज्ञान परंपरा में गहन रुचि और प्रारंभिक अध्ययन को प्रमाणित करती है। पं. श्री मणिशंकर द्विवेदी - आप साहित्य, व्याकरण, 'वेद' और संगीत आदि के धुरंधर मनीषी थे। आपको वेदशास्त्र का धुरंधर मनीषी कहा गया है, जो आपकी गहन वैदुष्य का प्रमाण है।

राजस्थान के इन वैदिक साहित्यकारों के कृतित्व का समग्र अवलोकन करने पर कुछ महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती हैं।

01 वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय - वेदों को विज्ञान का मूल स्रोत मानने की प्रवृत्ति (वेद-विज्ञान) इस युग की एक प्रमुख वैचारिक देन है। पं. ओझा, पं. मोतीलाल शास्त्री, डॉ. दयानन्द भार्गव और पद्म शास्त्री जैसे विद्वानों ने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि आधुनिक विज्ञान के अनेक सूत्र वेदों में पहले से ही विद्यमान हैं।

02 ज्ञान की विविधता और गहराई - इन विद्वानों का कार्य किसी एक विधा तक सीमित नहीं था। एक ओर पं. मधुसूदन ओझा जैसे मनीषी थे जो वेदों में संपूर्ण ब्रह्मांड का विज्ञान (ब्रह्म विज्ञान, यज्ञ विज्ञान) खोज रहे थे , तो दूसरी ओर डॉ. मण्डन मिश्र जैसे विद्वान् वैदिक दर्शन (मीमांसा) का आलोचनात्मक इतिहास लिख रहे थे। वहीं, डॉ. सुधीर कुमार गुप्त दयानंद सरस्वती की भाष्य पद्धति का विश्लेषण कर रहे थे और पं. महावीर प्रसाद जोशी **यजुर्वेद के अंशों का पद्यानुवाद**[16] कर उसे काव्यात्मक रूप दे रहे थे। यह विविधता राजस्थान की वैदिक परंपरा की जीवंतता और समृद्धि को दर्शाती है।

03 गुरु-शिष्य परंपरा का महत्त्व - ज्ञान के प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए रखने में गुरु-शिष्य परंपरा की केंद्रीय भूमिका रही है। इसका सबसे सशक्त उदाहरण पं. मधुसूदन ओझा और पं. मोतीलाल शास्त्री का है। ओझा जी ने वैदिक विज्ञान की जिस धारा का प्रवर्तन किया, शास्त्री जी ने अपने अथक परिश्रम से उसे एक विशाल वटवृक्ष का रूप दिया। इसी प्रकार, पं. गोपीनाथ शास्त्री दाधीच अपने गुरु श्री जीवनाथ जी ओझा से प्रभावित थे और डॉ. सुधीर कुमार गुप्त ने डॉ. फतहसिंह के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूरा किया। यह परंपरा ज्ञान की निरंतरता और उसके विकास को सुनिश्चित करती थी।

04 परंपरा और आधुनिकता का संगम - इन विद्वानों ने केवल प्राचीन ज्ञान की पुनरावृत्ति नहीं की, बल्कि उसे समकालीन संदर्भों में व्याख्यायित करने का भी प्रयास किया। वेद-विज्ञान' की पूरी अवधारणा ही इसका प्रमाण है, जो वेदों के वैज्ञानिक पक्ष को उजागर करने पर केंद्रित थी। दयानन्द भार्गव द्वारा पत्रिकाओं में स्तंभ लेखन और पं. गोपीकृष्ण व्यास द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंच पर अंग्रेजी में

व्याख्यान देना यह दर्शाता है कि ये विद्वान् वैदिक ज्ञान को आधुनिक माध्यमों से विश्व पटल पर रखने के लिए भी सचेत थे।

05 संस्थाओं की भूमिका - विद्वानों के व्यक्तिगत प्रयासों के साथ-साथ जयपुर स्थित महाराजा संस्कृत कॉलेज, बीकानेर का डूंगर कॉलेज और राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जैसे संस्थानों ने संस्कृत और वैदिक अध्ययन के लिए एक उर्वर भूमि प्रदान की। इन संस्थानों ने न केवल शिक्षा प्रदान की बल्कि कई विद्वानों को आजीविका और शोध के लिए एक मंच भी उपलब्ध कराया।

शोध निष्कर्ष - उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 17वीं से 20वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान वैदिक साहित्य के अध्ययन, सृजन और संरक्षण का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं जीवंत केंद्र था। इस क्षेत्र के विद्वानों ने न केवल वेदों की पारंपरिक व्याख्याओं को संरक्षित रखा, बल्कि 'वेद-विज्ञान' जैसी नवीन चिंतन धाराओं को जन्म देकर वैदिक अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान की। पं. मधुसूदन ओझा, पं. मोतीलाल शास्त्री, डॉ. दयानन्द भार्गव, डॉ. मण्डन मिश्र जैसे अनेक मनीषियों ने अपने मौलिक ग्रंथों, भाष्यों, और अनुवादों के माध्यम से वैदिक वाङ्मय को समृद्ध किया। इन साहित्यकारों का योगदान बहुआयामी था, जिसमें वैदिक दर्शन (मीमांसा, वेदान्त), संहिता-ब्राह्मणों की वैज्ञानिक व्याख्या, उपनिषदों का भाष्य, और वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार सम्मिलित था। गुरु-शिष्य परंपरा और अकादमिक संस्थानों ने इस ज्ञान की लौ को प्रज्वलित रखने में महती भूमिका निभाई। इन विद्वानों का कृतित्व इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि राजस्थान की पहचान केवल शौर्य और भक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रज्ञा और वैदिक चिंतन की भी एक गहरी परंपरा धारण करती है। पं. मोतीलाल शास्त्री के ग्रंथों को मिली 'भारतीय संस्कृति की कुञ्जी' की उपाधि, वस्तुतः इन सभी राजस्थानी वैदिक साहित्यकारों के बवससमबजपअम योगदान का सम्मान है। इस गौरवशाली विरासत पर और अधिक गहन शोध की आवश्यकता है ताकि इस ज्ञान-गंगा से भविष्य की पीढ़ियों को भी सिंचित किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

[1]मनुस्मृति 2.6

[2]तैत्तिरीय भाष्य भूमिका, सम्पादक बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, बनारस 1934, पृ.-2

[3]वैदिक साहित्य का इतिहास - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विवि प्रकाशन, वाराणसी, द्वि. संस्करण-2004 पृ. 1

[4]डॉ सुरेन्द्र शर्मा, समन्वयक- मासिक शोध पत्रिका,राज. संस्कृत अकादमी जयपुर सितम्बर 2024 पृ. 18

[5]मोतीलाल शर्मा वेदवीथीपथिक, उपनिषद् विज्ञानभाष्यभूमिका खण्ड- 3, मानवाश्रमविद्यापीठ , जयपुर, पृ. 13

[6]डॉ दयानन्द भार्गव, वेदविज्ञानविथिका, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, प्राक्कथन पृ. क

[7]डॉ प्रभाकर शास्त्री, आमेर जयपुर का संस्कृत वांगमय, जयपुर, पृ. 264

[8]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र , जयपुर पृ. 463

[9]डॉ शंकर लाल शास्त्री , राजस्थान के कृतिकार, राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र , जयपुर, पृ. 484

[10]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, पृ. 388

[11]डॉ. मधुबाला शर्मा, राजस्थान के प्रमुख मनीषी , रचना प्रकाशन जयपुर पृ. 96

[12]डॉ शंकर लाल शास्त्री, राजस्थान की संस्कृत सम्पदा, जयपुर पृ. 382

[13]डॉ शंकर लाल शास्त्री , राजस्थान के कृतिकार, जयपुर, पृ. 57

[14]डॉ, मधुबाला शर्मा, राजस्थान के प्रमुख मनीषी , रचना प्रकाशन जयपुर, पृ. 30

[15]डॉ शिवंगना शर्मा, शोध ग्रन्थ- आचार्य नवलकिशोर कांकर का व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन' राविवि. जयपुर , 1992

[16]डॉ शंकर लाल शास्त्री , राजस्थान के कृतिकार, जयपुर, पृ. 276